

## प्राप्ति रथान

- १—श्री अ. मा. साधुमार्गी जैन संस्कृति-रक्षण ग्रन्थ  
संलग्न मध्य-प्रदेश
- २— " एकुन बिल्डिंग, पहली धोवी-तलाव लैन  
बम्बई २
- ३— " सराफा बाजार जोधपुर राजस्थान

**मूल्य १-००**

प्रथमावृत्ति	बीर संवत् २५०६
२०००	विक्रम संवत् २०३७
	चैत्र श. १
	१७-३-८०

मुद्रक—श्री जैन प्रिंटिंग प्रेस संलग्न (म. प्र.)

## प्रकाशकीय निवेदन

इन्होंने अपार्टमेंट में बैठकर के गोपनीय वर्षों का अधिकारिता यात्रा संस्थान  
दृष्टि से किए हैं जहाँ वह आज ही शुरू हुआ है। अपार्टमेंट में बैठकर की अधिकारिता  
विषय के लिये विभिन्न विधियों द्वारा भी उत्पन्न रही हैं जो कि इन विधियों  
शुरू होने के बाद से नहीं हैं, जो अधिकारिता विधियों की अधिकारिता  
विधियों का अनुभव है। ऐसे अधिकारिता विधियों की विधियों का अनुभव  
विधियों का अनुभव है। ऐसे अधिकारिता विधियों की विधियों का अनुभव

दृष्टि द्वारा अपनी जीवन की अवधि को बढ़ावा देने के लिए यह एक अत्यधिक उपयोगी तरीका है। इसके अलावा यह अपनी जीवन की अवधि को बढ़ावा देने के लिए एक अत्यधिक उपयोगी तरीका है। इसके अलावा यह अपनी जीवन की अवधि को बढ़ावा देने के लिए एक अत्यधिक उपयोगी तरीका है।

हिंदुराम हीने पर भाग्ये 'मूर्त्तिराम' का नाम लिया था। वो इस देह  
है, जिसी भी उस देह मृत्युक की रक्षा हुई ।

मामान्न चाराक गर्व का बाल वो नहीं थी जो लिखे थे वो इस  
धनिया विना छिन्नी बाला के कर गाया है, या वो या नहीं, यामान्न वो ही  
हो या निर्विन, यामानी हो, या जो ऐसे लिखे बाला बाला लिखा गया  
का संचालक हो, मुरादूर्धि कर गया है, यांत्रो शब्द। या ऐसे गढ़े  
गर्व में यदा—याद्या होना आवश्यक है। दूसरा बाल्या होने पर भाग्ये के  
नियम यमाराति यात्रन करने और अपिक यात्रन करने की आशा अस्ति  
से प्रवति होती रहती है ।

मध्यग्रन्थर्वन गर्व ३० ग्रन् १६७६ के प्रारंभ में यह पृष्ठाक लेखदाता  
के स्वर में दियंबर ५० तक प्रकाशित होती रहती । इससे उपरोक्ता देख-  
कर भर्त्यप्राण उदारमता श्रीमात् शेठ लिलापत्न्यजी गा. बोहरा मंडपा  
निवासी ने पुस्तक के स्वर में प्रकाशित करने का अनुरोग किया थीर एक  
हजार पुस्तक के स्वर में की भावना बताई । फलद्वयम 'गायणगति गम्भो'  
पुस्तक प्रकाशित की गई । आशा है यह पुस्तक गम्भा के लिये अतीव  
चर्पदोगी होगी ।

श्रेष्ठाना

चैत्र शु. १ सं. २०३७

१७-३-५०

—रत्नसाल ठोकी



# सामण संडिह-धर्मो

( सामाजिक धाराका दर्शन )

देवगढ़ावरण—

(प्राचीन)

महायज्ञ जित्येविद्वे, चिदोरं गुरु-गतिविद्य ।

दिव्य-उद्यगि-पूर्व वैदे, अरण्याधार-गुरुंगर ॥१॥

— एषामात्र दीर्घो न हृषिक, देवो न इत्यः गुरुंगर, दिव्य-  
उद्यगि ने इत्यादि, अरण्याधार गुरुंगर ने ॥१॥ यही और अहम्भूत  
ज्ञानके लाभि इत्येवेष्ट वैदे का देव-धारण है ।

दिव्य-‘वैदे’ वृत्ति मे ॥२॥ अरण्याधार गुरुंगर, ‘गुरुं  
गर्वि’ वृत्ति मे ॥३॥ उद्यगिविद्य, ‘वैदे’ वृत्ति मे ॥४॥ अरण्याधार वैदे  
‘गुरुंगर’ वृत्ति मे ॥५॥ अरण्याधार वैदे गुरुंगर जित्य वृत्ति है ।

संडिहा गुरु-कार्य व, योग्यामि गुरुहृ सरावम् ।

गामण-संडि-धर्मे वे, गुरुंगरी वैदे वह वृत्ति

— (वैदेविद्वा वैदे) और गुरुंगर के ज्ञानके लाभका  
कार्य वृत्ति, वैदेविद्वा वैदे वह वृत्ति, गामण-संडि-धर्मे के  
ज्ञानके लाभका वृत्ति, वैदेविद्वा वैदे वह वृत्ति, गुरुंगरी वैदे  
ज्ञानके लाभका वृत्ति है ।

सामान्य आवक की परिभाषा  
जिणघमाणुरागी वा, जाओ कुलंगि तंसि वा ।  
सत्त-वसण-चाई वा, सो हि सामण्ण-सावगो ॥३॥

—जो जिनधर्म का अनुरागी हो अथवा जो जिनधर्म के अनुरागी कुल में जन्मा हो अथवा जो गत्त-व्यग्नों में रागी या कई व्यग्नों का त्यागी हो, वह गामान्य आवक है ।

टिप्पण-इस गाया में आवक की परिभाषा के तीन विकल्प चतुर्लाये हैं—

१ साधु-सम्मत, आवक आदि के गत्तगंग से जो जिनधर्म का अनुरागी बना हो, जिसकी चर्या किंचित् भृद् हुई हो और जो नमोगकार मंत्र का स्मरण करता हो, वह सामान्य आवक है ।

२ जो जिनधर्म के अनुयायी कुल में जन्म लेने के कारण मत्त-मांस का त्यागी है और साधुओं की उपासना करता है, वह सामान्य आवक है ।

३ जिसने साधु आदि के उपवेश को सुन कर, सातों कुव्यसनों (शिफार, धूत, मद्य, मांस, परस्त्री-गमन, वेश्या-गमन और चोरी) पा कई कुव्यसनों का त्याग कर दिया है और जिनधर्म पर अद्वा रखता है, वह सामान्य आवक है ।

### सामान्य आवक के करणीय नियम (काट्य)

मिच्छत्त-चाओ जिणघम-इच्छा, देवत्युई चंदणयं गुरुस्स  
मणोरहा धम्मुवदाण-सुद्धं, पहावणा संघ-सुहायरो य ।४।  
(अनुष्टुप्)

साहम्मियस्स उद्वारो, काउस्सरगो सुयस्सई ।  
णमुवकार-सहियं च, दिवस-चरिमं सया ।५।

आयुष्मान भारत सर्वेति, विद्युता एव विषयम् यत् ।

ਦੁਸਾਰੇ ਕਾਰਨਿਕਲਾਈ, ਸਾਡੀਜ਼ ਅਤਿਏਜ਼ ਹੈ। ੧੫

१ विष्णुका का दास, २ लिपावंशी की राजि, ३ शेषगढ़ी,  
४ दुर्गा की बहन, ५ अवधिकारिता, ६ उमीदवारा का दास,  
७ असो-शारामा, ८ मृत का भवानी, ९ शारदीय उडान, १०  
प्रसवीष्टि, ११ दुर्गामूर्ति व उत्तमा की विवाहक, १२ "अद्य-  
विवाहिति" विवाहक, १३ देवी-विवाहवाचारिका, १४  
प्रसवहार-वाचारका लेख १५ दीपालि दिन पर्यावरण १६  
प्रसव विष्णु विवाह विवाहका लिए विवाहक १७

दिल्ली वासी मानवाम, मुख्यमंत्री द्वितीय-कार्यक्रम।

मानव जीवन-प्रयोगीय, असंख्य विवरणों की  
एक विश्वासीय संकलन-संग्रहीत है। इसका उपयोग का  
(विभिन्न लक्षणों के द्वारा विभिन्न कामों की) विकास, एवं एक विवरण-  
कारी दृष्टि विकास-प्रयोगीता का उद्देश्य है।

四百九

卷之三

## ਮਿਥੀਆਤ ਦੀ ਵਰਿ ਬਾਬੀ

ନିର୍ମାଣ ଯୁ ସାଧାରି, ପାଇଁ କାହାରୁଙ୍କୁ ।

principales se fijaron su sentido en

क्षमता वाली ही बहुत ही अचूकी असरों का उद्देश्य है।

विषय-इस पाठ में विषयात्मक विचारों के लागे निम्न तारीखें-  
१. तर्जों में विषयात्मक विचारों में साधन एवं परिणीति । २. विचारों  
में अद्या और ३. विचारों में तर्जा एवं परिणीति ।

दूसरी शीति में हम गाना में विषयात्मक के तीन एवं परिणाम हैं-१. गाना  
एवं प्रजा के असाध में तर्जा का अविर्गत, २. पता होने पर भी तर्जा के  
निर्णय के असाध में अतहर के प्रति सम्मान और ३. पता के द्वारा तर्जा  
निर्णय के नाम पर विषयीत-प्रतीति । अगली तर्जा का अविर्गत, असाध-  
प्रतीत और विषयीत निर्णय विषयात्मक है ।

## मिथ्यात्मक के भेद

(काल्प)

दुखखस्स पुणे भव-वारि-मज्जो,  
जेणं णिवुडुा सयथं हि जोवा ।  
सो सज्जओ साहणओ य मिस्सो,  
मिच्छत्तभावो तिविहो पउत्तो ॥९॥

जिससे दुःख रुपी जल से परिपूर्ण भव-सागर में जीव गदा  
से ढूँढ़े हुए हैं, वह मिथ्यात्मक भाव साध्य, साधन और तदुभय  
माध्यम से तीन प्रकार से प्रवृत्त होता है । अर्थात् मिथ्यात्मक  
के तीन भेद हैं-साध्यगत, साधनगत और तदुभयगत ।

टिप्पण-पश्च की सार वाते-१. संमार दुःख रुप है और दुःखानुभव  
का प्रधान हेतु मिथ्यात्मक है । २. भव-परम्परा का कारण मिथ्यात्मक है ।  
३. साध्य आदि को नहीं समझता मिथ्यात्मक है ।

मार्गमत् विधात् ।  
मर्गमत् भगवन्-विदात्-मृदुया,  
भगवत् विदुप-विदात् तदा ।  
मृदुविदायो विद्यतामा वर्णेष्ठ चो,  
विदुपतामे तदमायं पर्वद्वयं ॥५॥

जून के दिवस में अमर-दिवार-गुहा, बड़ागढ़, बड़ागढ़-दिवार, करिमोदा और गर्वी व राजियावाला—बड़ागढ़-दिवार नामक स्थान पर्हे ।

लेकिन वहाँ जाना चाहिए तो उसके लिये अपनी जांच की तरफ से वहाँ के लोगों के बारे में जानकारी लेनी चाहिए। इसके लिये वहाँ के लोगों की जांच करना चाहिए।

२ अस्त्रामर्द्द—विवरण के लिये दो अलग-अलग लिपि  
की दो विभिन्न लिपियाँ हैं। एक लिपि अस्त्रामर्द्द की लिपि है।

१ शिवसमर्पणम्— शिवसमर्पण के दोषोंकी ही प्रक्रीया  
के लिए इसी अनुष्ठान के उपरांत शिवसमर्पण की गयी है।

५ अस्तित्वानुपर्याप्त रूप ही एक विशेष  
विभाग विद्या विद्या है।

५ ग्रन्थ की अवधारणा-पर्याप्ति की स्थिति, अनुसृति, विश्वास  
पर्याप्ति एवं अवधारणा के बीच की अपेक्षा इसकी अवधारणा की अवधारणा  
पर्याप्ति की अवधारणा की अवधारणा की अवधारणा की अवधारणा की अवधारणा

## माधवनगत गिर्वाचार

(गुरु)

अत्तगमं परगमं, साहस्रं द्वितीयं गमं ।

अत्तगमं तु सद्वाचा, देवी गुरुं विनेपां ॥११॥

—गायत्र दो प्राचार में गाने पर्यं है आगमा ३८  
परगत । अपने उत्तम भाव (ममाग्रदर्शन आदि) आगमा  
साधन हैं और देव गुरु और भर्म परगत गायत्र में ।

टिष्णा-आरण्य स्थि रिय में परिवात होता है । इर्यालों जाग्ना  
में गुणों का आविर्भाव आरपत्त फारण है और गुणों के आविर्भाव में  
सहायक अरिहन्त देव आवि परगत साधन हैं । इन्हें रामजी उपाराज और  
निमित्त कारण कहा जा सकता है । गाया में 'न' शब्द के द्वारा ग्रंथ को  
भी प्रहृण कर लिया गया है ।

भाववृद्धी ण सद्भावे, दुव्वभावे खलु सा भवे ।

ऊणा य अद्वित्ता उ, साहणतेऽतहा मर्द ॥१२॥

उत्तम भावों = सम्यग्दर्शन, धर्म, अहिंसा आदि में  
सद्भाव वृद्धि न हो—दुर्मार्व वृद्धि हो, दुर्मार्व मिथ्यात्व, क्रोध,  
हिंसा आदि में सद्भाव वृद्धि हो और उनकी साधनता—अगाध-  
नता में जिनोक्त भावों से कम या ज्यादा वृद्धि हो, तो वह  
साधनगत मिथ्यात्व है । अर्थात् साधनगत मिथ्यात्व के १ साधन-  
विषय, २ न्यून-साधन-प्रतीति और ३ अधिक साधन प्रतीति-  
ये तीन रूप हैं ।

तत्त्वभमं तु मिच्छत्तं परगयं तिज्ञेयगं ।

लोउत्तरिय-लोइय-कुण्पावयणियं चए ॥१३॥

जे भवति वाच के असम्मा, शोरी-  
पुरी, शैक्षिक सेवा यात्राएँ आदि भी ऐसे दरात  
विकास की दृष्टि ।

प्रियतन—जूह जाता है विविधराज, अबती फिरवे के द्वारा  
क्षेत्र बदलते होते हैं। अपेक्षा में ही वी लीला-कीरण एवं दृष्टि है ; सोमशिख  
देवीत नहीं, यद्युप ऐसे भी विविधराज जाते हैं। इनमें विविध  
की विविध विविधता होती है ; जैसे अपेक्षा विविध के विविध विविध  
होते हैं ताकि वह जीव विविधराजी जाता है। विविधराजी कहते हुए  
कहते हैं, विविध जाते ही जीवों की विविधता होती है ; इनमें अपेक्षा  
विविध ही विविध की विविधता जाता है ; जैसे वी विविध  
विविध विविधता की विविधता ही होती रहती है, विविध ही विविध  
विविध है, यह वी विविध है। इस विवेदे के विविधता होती है, इसमें  
वी विविध होती है जैसे विविधता की विविधता ही विविध होती है विविधता की  
विविधता विविधराज है ; विविध विविधता वी विविध है।

इ-विद्यालय विज्ञान

三

## THE BOSTON FESTIVAL.

卷之三

#### **THE FIRST WORK OF THE**

#### **REFERENCES**

କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର  
କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର

(रुद्रिन-द्वारा भी द्वैरात्रि) अः यात् यस्ति पात् १०  
मात्, उम प्राप्ति लो मिथा त इ यस्ति ११। यस्ति १२।  
हे, तत् उन्नयना मिथा हो ।

टिष्ठन्—इस पद्य में मिथ्यामिथान के लाभ का वराणे गया है—  
१ गज्जारों से मायाशिका यात्, २ गुड वर्गारों से मायाशिका यात्,  
३ तुर्सियों से शिव यात् और ४ गुरुत वर्गारों से खिल यात्। प्रथम  
के यातना (इच्छा) और यारणात् एव दोनों चेत् हो जाए ।

### मिथ्यात्व का त्याग

सपं जलीहि विणाण जुतो,  
समुद्धिथो णं गुग-पाय-मूले ।  
मिच्छत्तमावस्त करेज चायं,  
संतो क्यणो य तिजोगमुद्धो ॥१५॥

ग्रांत श्रुतज्ञ और दोनों योगों से गुद बन कर, विना  
सहित हाथ जोड़ कर और गुरुदेव के नरणों में यज्ञा दह कर  
मिथ्यात्व भाव का त्याग करे ।

टिष्ठन्—इस पद्य में मिथ्यात्व के त्याग की प्रतिज्ञा लेने की विधि  
घतलाई गई है । यथा—१ अहंकार का त्याग करके गुरुदेव के समीप जाना  
२ दोनों हाथ जोड़ना और उन्हें मस्तक से लगाना, ३ मस्तक मुकाना,  
४ मनःशुद्धि—गुरुदेव और प्रतिज्ञा के प्रति यद्युमान रखना, ५ कायसुद्धि—  
अन्य लियाओं को छोट कर धंचांग दुका कर धंदना करना, ६ विनम  
सहित गुरुदेव के घरण कमलों में लाखे रहना, ७ वचनशुद्धि—गुरुदेव से  
प्रतिज्ञा की याचना करना, ८ मिथ्यात्व का त्याग करना अपर्त् प्रतिज्ञ  
के वचनों का उच्चारण करना, ९ प्रतिज्ञा के याद गुरुदेव के प्रति कृत

माता पत्नी हरके दृढ़ वंशदात (हो जाए ही युद्धमें भीर मात्रा) तुमा हर  
मात्रामाता हरमा भीर । २० राम शिख अवृत् तुम एव तिर रह चर  
मिलता दातार ही मात्रा कामा भीर । एव विकामे विकल जो तो  
जित्ता अधिकारीय ही, वे एव एवता । एव अस्त्र वहर भी भीति ही ।

### विष्णवाह्य के स्पर्श फल कथ

(भाग्य)

माते म-विष्णवाह्यति त, संकरये सप्तवं फले ।

तुविष्णवाह्यता-वाप्य, विष्णवं परमो रथ ॥१८॥

—विष्णवाह्य अवृत्ति के विषय में विष्णवाह्यति कहे । विष्ण  
विष्णवाह्यता ही अपनी विष्णव वै विष्णु भवे । दृढ़ विष्णव वै । दृढ़ विष्णवाह्यता की विष्णव वै विष्णु भवे । विष्णव विष्णवाह्यता  
वै । विष्णव विष्णव विष्णवाह्यता वै । विष्णव विष्णवाह्यता में विष्णव वै  
विष्णव वै ।

विष्णवाह्यता वै विष्णव विष्णवाह्यता के विष्णव वै विष्णव  
विष्णवाह्यता ही विष्णव वै विष्णव वै ।

### विष्णवाह्य का व्याख्य

(भाग्य)

विष्णवाह्य-दीर्घ विष्णु विष्णवीता,

विष्णव-वृद्धि ते तुमो तुली का ।

माते विष्णवी विष्णवाह्य विष्णवी,

माते विष्णवी विष्णवी विष्णवी ॥१९॥

विष्णवाह्य के दीर्घ विष्णवाह्य विष्णव विष्णवी विष्णवी विष्णव  
विष्णवी विष्णवी विष्णवाह्य विष्णवाह्य विष्णवी विष्णवी विष्णवी

नारायारहों धारण करे और जग को शार्यार्थी विषयात्मक मान।

प्रथम-इस पद में प्रियात्म के लाभ में अपवाहन के लिये करणीय कुरु प्रियार्थ गतार्थ गद्द हैं । गणा-१ गद्यार्थों के अध्यात्म में प्रियात्म के द्वारा होने गायी गोत्य-उत्तरध्यात्मा एवं और प्रियात्म के बुद्धि कारों की जानकारी करता, २ गार-वार उनका निलान करता, ३ प्रियात्म-लाभ के संहत्या एवं दूषित करने वाले अविनार्थों का पुनः-पुनः निलान करते हुए उनसे गतना, ४ संकला-शुद्धि की जाकरा करता, ५ भीने प्रियात्म का लाभ कर लिया है ।—यह सोन गर प्रसन्न होना और ६ गार-वार हृषि को धारण करना तथा ७ ‘प्रियात्म का लाभ कर लेने के कारण मेरा जन्म कृतार्थ हो गया—सफल हो गया’—यह वार-वार सोचते रहना ।

### द्वितीय घोल

(जिनघ्रन्मं-प्रीति)

**किसका शरण है ?**

(अनुष्टुप्)

विविहा धर्महित्पाया, विरुद्धा वि परोप्परा ।

णियम्मि वि विरुद्धा ते, कस्स मे सरणं जगे ॥१८॥

(मुमुक्षु जीव पुकार करता है—) जगत् में धर्म के विषय में भाँति-भाँति के अभिप्राय हैं । वे परस्पर विरुद्ध भी हैं अरे ! वे अपने-आपमें भी विरुद्ध हैं । ऐसी स्थिति में मुझे किसका शरण है ?

**धन्य है वह**

जिणिद-धर्मो हि जगे अबीओ,  
सच्चेव सच्चो स हि मोक्षमग्नो ।

सो दुरितो अविष्ट शास्त्रियां,

ପାଞ୍ଚମୀ ରାତ୍ରି ମୁହଁ କାହାରେ ଥାଏନ୍ତି କେବଳ

जिससे अपनी की अद्वितीय बुद्धि देख लिये इस  
अपने भवित्व के बाहर आया है जो उनकी अवधिकारी है।  
इसी विषय के लिए वह अपनी अद्वितीय बुद्धि का उपयोग  
करके अपने अपनी अद्वितीय बुद्धि का उपयोग करके अपनी  
अपनी अद्वितीय बुद्धि का उपयोग करके अपनी अद्वितीय बुद्धि का उपयोग करके

卷之三

ପାଇଁର କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ

"*It's a great satisfaction*" 3

Digitized by srujanika@gmail.com

19. *Leucosia* *leucostoma* *leucostoma* *leucostoma* *leucostoma*

（卷之三）

### अला को हेतु

वत्तू अणेता नि ण तो नियागा,  
दोसा फसाया ण हि किनि हेतु ।  
वाया तउते सरिया व जंति,  
कम्हा ण सङ्ग पकरे जिमसरा ॥२१॥

(मुमुक्षु की गमाधान प्राप्त होता है—) इस निर्णय-प्रबन्धन के थनन्त वयता होने पर भी इसमें परमार किंगी प्रकार का विरोध नहीं आता है। क्योंकि उन वनाशों में द्विगादि दोष और कपाय स्पी कानिमा किनित् मात्र भी नहीं हैं और उन महापुरुषों के प्रबन्धन स्पी गागर में गभी वाद नदियों के गमान मिन जाते हैं। किर किंग कारण से इस निर्णय-प्रबन्धन की अद्वा नहीं करते ही ?

### अपनी भी बुद्धि है

अम्हे हु सच्चति कहेन्ति सद्वे,  
सच्चं परं कि ण ममाण बुद्धी ।  
वरं कहेंतस्स सथस्स वत्युं,  
कीणिज्ज को तं वय पुइगंधं ॥२२॥

'हम ही सच्चे हैं'—सभी यही कहते हैं—यह सत्य है। किन्तु हमारी बुद्धि नहीं है वया ? अपनी वस्तु की अच्छी वतलाने वाले की उस सङ्गी हुई और दुर्गन्ध से युक्त वस्तु को, कहो, कौन खरीदेगा ?

आत्मा ही प्राणी ही  
परं परमात्मा जिसे हि मृणं,  
परं वा अं चक्षुमि अ-चक्षयात् ।  
प्राणी अस्याद् परं कुरुते का,  
परिषद् सदा गात्रो हि इति ब्रह्म

करना है जिस दृष्टि से वहाँ वह एक अद्यता है औ  
वहाँ है जिस प्रकार वे अपने देश की अपील  
हो। इसके अलावा जिस दृष्टि से वहाँ वह एक अद्यता है  
यह एक अद्यती अद्यती है। इसीलिए वह एक अद्यता है

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਜੀ ਦੀ ਮੌਜੂਦਾ ਪ੍ਰਤੀਲਿਪੀ ਹੈ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਅਤੇ ਸ਼ਬਦਾਵਿਤ ਹੋਏ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀਲਿਪੀਆਂ। ਇਸ ਵਿੱਚ ਸਾਡੇ ਅਤੇ ਸ਼ਬਦਾਵਿਤ ਹੋਏ ਹਨ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦੀਆਂ ਪ੍ਰਤੀਲਿਪੀਆਂ।

११ विष्णु की देवी 'लक्ष्मी' का एक अन्य नाम है।

Digitized by srujanika@gmail.com

३५८

भक्ति गदं तमिम हु परन्नयं च,  
तिव्यं करेज्जा किर एस कुज्जो ॥२४॥

—निश्चन्द्र ही जिगाली गेवा भान्दुग को गिलाने वाली है, सुरक्षा करने वाली ही और पाप रापी गोपा को दरने वाली है, उसी निर्गम-प्रवचन में ही तीव्र रूप से भक्ति (अद्वा) छनि और प्रतीति करो और निश्चन्द्र ही यही करना गोप्य है।

टिप्पण—अहेनुगम्य मायों की अद्वा, रावंजोगत कियानुष्ठान की रचि और तर्क-साध्य मायों की प्रतीति करना योग्य है।

### अद्वा-पोषिका भावना का अभ्यास (अनुष्टुप्)

सब्बाणुद्वाण-मूलं हु, इर्म कुज्जा सुभावणं ।

‘सच्चं तमेव नोसंकं, जं जिणेहि पदेइयं’ ॥२५॥

सभी धर्म-अनुष्ठानों की मूल रूप निम्नलिखित इस उत्तम भावना का सदा अभ्यास करो—‘वही सत्य है—शंका से रहित है, जो राग-द्वेष से रहित आत्माओं ने कहा है।’

### धर्म-प्रीति सदा रहे (आर्य)

जिणणाहु-धर्म-पीई, समत्त-सुह-इड्डि-दाइणी सुद्धा ।

वासं करेजज णिच्चं, माणस-कमलंमि लच्छिव्व ॥२६॥

(मुमुक्षु आत्मा भावना करता है—उपर्युक्त भावना के अभ्यास आदि से) हृदय-कमल में, लक्ष्मी के समान समस्त सुख और ऋद्धि को प्रदान करने वाली जिनेन्द्र देव के धर्म की

卷之三

ଶିଳ୍ପ-ରକ୍ଷଣ-ବସ୍ତୁ-ଦିଗ୍ନି, ଜୀବ-ଜୀବ-ବ୍ୟାକ୍-ବ୍ୟାକ୍ ଏବଂ ଜୀବିତ ।

શાસ્ત્રીય વિજન-કાળ, ધર્મસા પદ્ધતા સંપર્કમાં નિર્માણ

(प्रश्नां) प्राप्तान् (देवता देव) के बारे अधिक जानकी विषय में इन अध्येयों में से कौन सी विषय है ? उत्तर दीजिए । अनुसन्धान की दृष्टि से इनमें से कौन सी विषय है ? उत्तर दीजिए ।

కుమార వీర

三

卷之三

ବିଜୁ-କାନ୍ତିନୀତି, ପାତା-କାନ୍ତିନୀତି,

અને કાર્યક્રમ એવી રીતે હોય ।

मात्र निष्ठा-वार्ता, गुरुपूर्वकांशी।

२ अप्रैल, दिल्ली फॉरम १९८१

ପାଦମୁଖ କହିଲା କାହିଁ କି କିମ୍ବା ଏହି ଅନ୍ତରେ କି କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

三

藏文：**བྱତ୍ୟନ୍ତରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା**

卷之三

तिकाल-रंगा-सरणिजगजो तं,  
पच्चासु-कालंमि प्रारे अवरसं ॥२९॥

देवों के पूजा, तीन लोक के भाग आग्रहक भगवान्  
निष्ठनय ही आराध्य देते हैं। वे तीनों गवाजों में समरण करने  
योग्य हैं। प्रभात काल में उनका समरण अग्रस्थ करना चाहिए।

(अनुष्टुप्)

स-हिथर्यंमि कुच्चेज्जा, जिण-णाहस्स अच्चर्ण  
पद्मिदिण हि तिवलुत्तो, असपके चेथ वा सङ्गं ।३०।

अपने हृदय में जिननाथ की अर्चना प्रतिदिन तीन बार  
करे। यदि यह अशक्य हो तो एक बार अवश्य करे अर्थात्  
जिनेन्द्र देव का स्मरण त्रिकाल न हो सके तो एक बार तो  
करना ही चाहिये।

### स्तव और पूजा

दच्च-भावाण भेण, आहिभो दुविहो थघो ।

होइ पूया वि सो चेव, सहरिसो करेज्ज तं ।३१।

-द्रव्य और भाव के भेद से स्तव दो प्रकार का कहा गया  
है और वही पूजा है। इसलिये सहर्प स्तव (पूजा) करना चाहिये।

टिलण-द्रव्य स्तव और भाव-स्तव-इन प्रत्येक के दो-दो अर्थ हीते  
हैं। द्रव्यस्तव-आराध्य के द्रव्य = शरीर, अतिशय, यथा आदि की प्रसंसा  
या आराध्य की द्रव्य = वचन आदि के द्वारा स्तुति। भावस्तव-आराध्य  
के भाव = ज्ञानादि गुणों की स्तुति या आराध्य की भाव के द्वारा स्तुति।  
यही दूसरा अर्थ प्राप्त है।

卷之三

三

प्राया विष्णुस्तुति दर्शन ।

कार्य लो देख मद्दति ।

અને પાંચ કર્મ વિદ્યા.

Digitized by srujanika@gmail.com

३४८ श्रीरामचन्द्र के नाम से विद्युति विद्या  
विद्युति विद्या विद्युति विद्या विद्युति विद्या  
विद्युति विद्या विद्युति विद्या विद्युति विद्या

הנִזְקָנָה

ग्रन्थाद्यां शोधेत् शो विद्याम्, अस्मि विद्याम्। ग्रन्थं विद्यते ।  
द्युष्टान्विद्याम्। ग्रन्थं विद्यते, विद्यते विद्याम्। ग्रन्थं विद्यते ।

ଶ୍ରୀ ମହାଦେଵ ପାତା ପୁରାଣକୁ ଶ୍ରୀଯ କରୁ ଆମେ  
ଶ୍ରୀଯ ପାତାକୁ କରୁ ଏହାରେ ଶ୍ରୀଯ ପାତାକୁ କରୁ ଏହାରେ  
କାହାକାହା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

卷之三

卷之三

卷之三十一

在這裏，我們可以說，「我喜歡你」就是「我喜歡你」。

ग्रन्थादि का नोचितान इसने पाठ लियी थी और अथवा शक्ता (नमोऽप्युं एक के पाठ) गे गा अथवा गंगल, लिये आदि भावाओं के स्वोर-शुभ्रियों में परिचित लिख उन्हें गा गूर्योदित गे पढ़ते जिनपूजा करें।

### नियन्त-विद्यान

अहवुग्यसूरंमि, कुज्जा सिद्धाण-संयतं ।

सूरत्थमण कालंमि, तित्येस-युद्ध-मंगलं ॥३५॥

अथवा गूर्योदित के समय गिद्ध भगवतों की स्तुति करें और गूर्योदित के समय चीवीग तीर्थकर भगवतों का गतुति-मंगल करें (टिष्ठण-प्रातःकाल में 'गमोत्थुं' का पाठ और सायंकाल 'लोगस्त' का पाठ स्मरण करें।

### चतुर्थ बोल

(गुरु-वंदना)

### गुरु का महान् उपकार

(काव्य)

महोवयारो हि सम्मत्त-दाइणो,

जिर्णिद-धर्मंमि सवकज्ज-कारिणो ।

अणं महं तत्स अम्हाण सीसए,

नमिज्ज तं देवयं चेइयं गुरुं ॥३६॥

हमें सम्यक्त्व प्रदान करने वाले और जिनेन्द्र देव द्वारा उपदिष्ट धर्म में उत्तम धर्म-क्रियाएँ—व्रतादि करवाने वाले गुरु का हम पर महान् उपकार है। उनका हमारे

କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର  
କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର କାହାର

सामा-जनरेश-शंखना

三

ମିଶନାରୀ କ୍ଲାରିସ୍, ପାତି କାନ୍ଦିଙ୍ଗ ମୁଣ୍ଡା

मोहन लाला-सरोदार, अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समिति

मुक्ति देखने की अपेक्षा नहीं है। यह विद्यालय बड़ी रफ़तार से विकास करना चाहता है।

卷之三

मात्रका गुणकांक, विकारी एवं विवरी ।

କୁଣ୍ଡଳ ରେ ଆଶ୍ରମ ହେଲେ, କୁଣ୍ଡଳ-ଦ୍ୱାରା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

（二）在於此，我們要指出的是：「新舊」的關係，並非是「新舊」的關係，而是「新舊」的關係。

Digitized by srujanika@gmail.com

અને એવી વિશે કોઈ વિશે, પરિણામી એવી વિશે

एवं विहित् जागिया, न रथाण् गुरुदण् दि । १३१  
जा एव इर्पियो तो बाहु वा नहि पायो तो ॥  
जा पूर्व गमया करे । इन पाला एव उत्ता नि तीर्थी  
बनाया गमयाना भासिये ।

### आमस्थित गुवती को बनदना

साहू वा साहूणीओ या, भूसोति स-पुरं जया ।

वंदिज्जा ते तयाऽवसं, रादंपि शुद्धाण् सया । ४०

कोई साहू या साहूणी जन आगे पुर को प्रोभित कर  
रही हीं, तब उन गुवरियों को मदा जवाह ने निराङ्ग तवत्क  
प्रतिदिन एक बार भी बनदना अवश्य करें। अपर्यु उनके दर्शन  
करें।

### पंचम घोल

(मनोरथ-चिन्तन)

(पाठ्य)

लोयंसि अस्सि तु अणंत-भावा,  
तम्हा अणंता य मणोरहा वि ।  
तत्तो विमोक्षाय करेज्ज सुद्धे,  
तित्येस-बुत्ते ति-मणोरहे हु ॥४१॥

इस लोक में अनन्त पदार्थ हैं। इस कारण जीव के  
मनोरथों का भी कोई अन्त नहीं है। उन विकल्पों के जाल से  
छूटने के लिये, भगवान् तीर्थकर प्रभु के द्वारा कथित शुद्ध तीन  
मनोरथों का अवश्य सेवन करो।

卷之三

२८-नविन्द्रिष्ठ-पार्वती, अद्यता इह संकाली ।

ମନ୍ଦିରାଳ୍ପାତ୍ରାବ୍ଦୀ, ମାଧ୍ୟମରେ ମନୋରା ମନ୍ଦିର

३ अपनी अंगरेजी के लिए लो, त बाहुद वही अवश्य  
करता है औ इसकी आवश्यकता अपनी अंगरेजी के लिए है।

માત્રાંક માનવિકી

卷之三

ପାଦମୁଖ କରିବାର ପାଇଁ ଏହାର ଅନ୍ତରେ କିମ୍ବା ଏହାର ପାଦମୁଖ  
କରିବାର ପାଇଁ ଏହାର ଅନ୍ତରେ କିମ୍ବା ଏହାର ପାଦମୁଖ

蒙古文

Witarras wifangs. Am fern r' wifent.

ਪੰਜਾਬ ਵਿਖੇ ਪੱਧਰ ਵਿਖੇ ਅਤੇ ਸਾਡੀ ਵਿਖੇ ਆਪਣੀ ਮਹਾਂਕਾਲੀਨ ਮਾਤਰਾ ਵਿਖੇ ਉਚੀ

故其子曰：「吾父之子，其名也。」

३८५ अस्ति विष्णु गीतार्थी एवं श्रीरामानन्द एवं श्रीकृष्ण



प्राण-पौष्टि-सहारं द्वा-सोऽसाधेन्दु-द्वारे ।

અન્યાં કાર્યક્રમ હા, તોંફિસ રિપોર્ટ કરવાની પ્રણાલી

मुख्य विषयात् दीर्घी है, अतः विषयात् विवेचनी वा

ବିଜ୍ଞାନ କୁଣ୍ଡଳ ମହିଳା, ଯେତିମି ଏହି ଦୟା  
କେ କୁଣ୍ଡଳଙ୍କ କୁଣ୍ଡଳ ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁ  
କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ  
ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ ଏହି କାହିଁରେ

Figure 1. *Antennae, wings, legs, and head*.

એવી ફરજ નથી, કિંમતિની રૂપાણી નથી

卷之三

ପରିବାର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା







ਪਾਸੀਂ ਹੈ ਸੰਗ੍ਰਹੀ, ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਹੈ ਯੁਗ । ਕੋਈ  
ਅਭਿਆਸ ਨਹੀਂ, ਅਵਸਥਾ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਵਿੱਚ

故其後有事者，必於其後也。故曰：「知其然，則可矣；知其所以然，則可也。」

निर्वाचन दिन को, जहाँ सम्प्रदाय का ।

FIGURE 3.2. *Estimated costs, 2011 dollars, for each 1000 kg of CO<sub>2</sub>*

१५ विष्णु त्रिलोक एवं द्युर्लभ विश्वासा विनाशी ।

卷之三

અને એવી કાર્યોની પ્રદૂષણ કરી રહી હતી, જે આપણી વિશેષ વિધુલી વિશેષ

“कृष्ण अपार्वती के नाम से जिस देवी का इस देश में विभिन्न रूपों  
में विद्युत होता है, उसका नाम क्षमा है। एवं विद्युत का विद्युत है,  
जिसका नाम विद्युत है। एवं विद्युत का विद्युत है, जिसका नाम  
विद्युत है। एवं विद्युत का विद्युत है, जिसका नाम विद्युत है।”

कहा है, ऐसे जगत का जग ऐसे ही महान है ?

चितिक्षण तहां परम, एवं प्राणं पि प्राप्तम् ।

बारहुषाद उज्ज्वलो, संकेतपूर्ण वरं करे । १७।

इस प्रकार तासनामि भाव का विवर करके शास्त्र मात्र भी प्रमाद न करे । अनिता आराधना में चार द्वितीय श्लोक संलिप्त हैं (अनिता अनिता आराधना की गिर्या भावना करे)

(काण्डा)

କାହାର ପାଇଁ କାହାର ଲିଖିତ କାହାର କାହାର କାହାର

गिरावटी ए सामूहिकतारे, लक्ष्य अपेक्षा दर्ता १९४६

બેન્ફાર્મ એન્ડ કોર્પોરેશન,

**ANSWER** *What is the best way to increase sales?*

ପାତ୍ରମାନ କେବଳ ଏକାକୀଳ ବିଷୟ,

西藏自治区民族事务委员会 藏文教材编审委员会

અને એવી વિશ્વાસી, જીનું કાર્ય કરતું

નારોડી શિક્ષણમંત્રી, માનુસ કાર્યાલાય, અધ્યક્ષ

וְעַתָּה תִּשְׁמַח אֶת-בְּנֵי-יִשְׂרָאֵל וְעַתָּה תִּשְׁמַח אֶת-בְּנֵי-יִשְׂרָאֵל

Digitized by srujanika@gmail.com

19. *Chlorophytum comosum* (L.) Willd. ex Willd. (Asparagaceae)

३२८ विजयनगर राज्यात्मक विद्या के अधीनस्थ विद्यालयों में से,

故此，我們在這裡要說的是：「我們的主耶穌基督是神」。

卷之三十一

第二章 中国古典文学名著与现代传播学研究

卷之三十一

— ४८५ —

卷之三十一



कृष्ण : अपाप्यना वीरजन करेंगे और एक दुष्ट द्वारा  
भास्त्रधार में भास्त्र दह वा उसके साथ वा वरद बर्जेंगे ?

आदा आरोदया लिय-खामोहा काय-संखमी ।

विद्वान् च नमोश्वारो, गुह्यं वरणा-मई । १५०।

प्रथम आरोदया लीय-खामोहा,

प्रथम खामोही च आहुय-प्रगल्भा ।

प्रथम त्रिमा शुक्रवाच विद्या,

आरहुयाप् च गुदायुमोद्यार ॥१५१॥

वसुरेषु वसुश्वारो, विद्वान्मोहि शीर्ष,

आरहुल करित्यापि, वसु शीर्षे इय । १५२।

विद्यु वाय ती शुक्र-भृत्यवार्त्ते ये तदा ॥-१

आरोदयाप्ता च एक वा द्वयादिक्षि च विद्यु वायवाच की  
वायवाचि, आरोदया च ती वे ती द्वय तीपी की वायवाचि

वायवा, च वायवाचि च वायवाचि च वायवाचि वायवा, च वायवाचि

च वायवाचि च वायवा की विद्या विद्या वा वायवाचि, च विद्यु

वायवाचि वायवाचि की विद्या विद्यावा वायवाचि वायवा, च विद्यु

वायवाचि वायवाचि वायवाचि की विद्या विद्यावा वायवाचि वायवा, च विद्यु

वायवाचि वायवाचि वायवाचि की विद्या विद्यावा वायवाचि वायवा, च विद्यु

वायवाचि वायवाचि वायवाचि की विद्या विद्यावा वायवाचि वायवा, च विद्यु

वायवाचि वायवाचि वायवाचि की विद्या विद्यावा वायवाचि वायवा, च विद्यु



तुम्हें लिखता हो, असी-साथे फौं।  
अपनीने आमी शिरो, कापा जानवरीनी बोल  
कि तू भाव फैला दो, तो अपनामानी बोल,  
आमी आमी तो आमी तो आमी तो आमी तो आमी  
बोलो ॥

जानवरी शिरो-साथीहोही,  
सिंहासन भी । गुणित्रयवानी ॥  
तुम्ही तु उत्तम-दृष्टिही था,  
तिरिक्षण भाव । गुणाम-सीधा बोल

इ बाबी । गुणाम-सीधा गुणाम-सीधा बोल आमी  
जून भाव के बाबी अह बोल, गुणित्रय तो बोल के दूर  
जानवरी तु तु तु अही शुभाम के अपनी त्रिपुरी तु तु तु ॥

पद्म शंख

{ गुणाम-सीधा }  
गुणित्रय शिरो शुभ बोलो,  
शिरो शिरो शुभ बोलो ॥  
शुभिं शिरो शुभ बोलो ॥



वेदा य गुहयो रेत, दुष्टिः सौर्ति देवता ।

माता-दीप्तिः-गोप्याह, भवतीता व तिष्ठा इत्था  
दीप्त भवता वी वाता के लिए इन्हें और उप-भवता,  
भवता, दीप्तते भवता व भवता व भवता व भवता ॥

देवता व भवता, भवता भवता भवता ।

मुख्य-मुख्योदीता, भवता ए-भवता इत्था

मुख्य भवता इत्था का, मुख्य भवता का वी भवता भवता (भवता)  
भवता भवता भवता भवता भवता भवता है : मुख्य भवता  
भवता भवता भवता है ॥

भवता भवता भवता, भवता भवता भवता ।

भवता भवता भवता भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता के भवता के भवता भवता के भवता  
भवता, भवता भवता, भवता भवता के भवता भवता भवता  
भवता के भवता है ॥

भवता भवता भवता, भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता, भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता  
भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता ॥

भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता  
भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता भवता ॥



### शीर-वामापना

(त्रिविद्या)

पद्म तो वामसे बहु-मासी,  
पद्म गोमासी विद्य-मासी ।  
पद्म तो वामसे बहु-मासी,

पद्म वीरामसी वाम-विद्या वाम ॥

जो वामसी दुर्गी (पद्मी) भी वामसी वाम तो वामसी  
वाम वाम से दुर्ग वामसी वामसी विद्या वामसी ।  
वामसी वामसी ही जो वामसी तो दुर्ग विद्यावामसी वामसी  
वामसी ही, वाम वामसी विद्या वामसी वामसी वामसी वामसी ही ।

(त्रिविद्या)

शीर-वामापना बहु-वामी विद्या वामसी ।

विद्यावामी वामसी वाम, विद्या वामसी वाम ॥

जो वामसी तो वामसी वामसी ही, वामसी वामसी वामसी ही  
वामसी वामसी ही, वामसी वामसी वामसी ही ।

विद्यावामसी वामसी वामसी वामसी वामसी वाम  
वामसी वामसी वामसी वामसी ही ।

### वामापना-वामापना

वामापना, वामापना, वामापना वामापना ॥

विद्यावामी वामापना, वामापना वामापना वामापना ॥

वामापना वामापना वामापना वामापना वामापना ॥  
वामापना वामापना वामापना वामापना वामापना ॥



‘हरे जगत् एवं शुद्धा, अस्मि ते विषयम् एवं ॥५॥

पूर्ण देह शुद्ध देविये विषया विषयी विषय के विषय  
विषय है, जो एक देवी विषय है । एक विषय शुद्ध एवं विषय  
विषय शुद्ध एवं विषय विषय है ।

and it feels similar, except for one!

१०८ विश्वासी विश्वासी का विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास  
विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास  
विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास  
विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास के विश्वास

साक्षिया नहीं पाएँ, जिसकी वजह से

ପ୍ରକାଶକ ମହିନେ ଲାଗାଯାଇ, ଏହି ଗ୍ରହଣର ପାଇଁ ୧୯୫୧  
ଜାନ୍ମ ଆମ୍ବାଦିର ପାଇଁ ଅନୁଭବ ହେଲା, ଏହି ପାଇଁ ପାଇଁ ପାଇଁ  
ଏହି ଗ୍ରହଣ କୁଳକ କାନ୍ତିକ ପାଇଁ ଅନୁଭବ ହେଲା, ଏହି ପାଇଁ ପାଇଁ  
ଏହି ଗ୍ରହଣ କୁଳକ କାନ୍ତିକ ପାଇଁ ଅନୁଭବ ହେଲା, ଏହି ପାଇଁ

卷之三

卷之三十一

—  
—  
—  
—  
—

सम्यक् शुत तीर्थ का गूल है और गुण-गमूह का प्रहारक है। जो ऐसे गम्यह शुत के जान और शन के द्वारा धर्म का प्रभाव बढ़ाता है, वह धन्य है।

धर्मं सर्वं पभावेजजा, वयखाण-पाढणेहि वा ।

पयारगे पढावित्ता, पेसित्ता जत्य-तत्यहि ॥१०२॥

व्याख्यान और धर्म-शास्त्र के अध्यायन में स्वयं धर्म की प्रभावना करे और प्रचारकों को रीढ़ान्तिक ज्ञान पढ़वा कर और जहो-तहों (देश-विदेश में) भेज कर, दूसरों में प्रभावना करवाये।

### गुण-आदर से प्रभावना

आयरणं गुणाणंति, जिणवरस्स सासणं ।

मण-वय-कियाहि ता, सम्माणं गुणिणो करे ॥१०३॥

'गुणों का आदर करना अथवा गुणों का आचरण करना'— यह जिनेश्वर देव का शासन (उपदेश) है। इसलिये मन, वचन और क्रिया से गुणीजन का सम्मान करें।

(काण्ड)

भवेह कित्ती जिण-सासणस्स,

धर्मे सुही होइ गुणी विसण्णो ।

संबोहिवीयं सुव्वेह अप्पा,

गुणीण सम्माण-समायरेण ॥१०४॥

गुणियों का सम्मान करने से जिनशासन की कीर्ति होती

प्राचीन भारत गुरुसु

रहे थे महिला प्रत्यक्षित हुए।

मनो विद्या विद्या विद्या ॥१३॥

मुमा इत्यादा शुद्धा व विनाशक  
प्रयोग ता वर्त्म भित्ति ॥ ३०४॥

मुझे यह बात नहीं लगती कि आपका जन्म विद्युत के द्वारा हो सकता है।

१०८ से दूर

100

(77) *Leptothrix* *leptothrix* *leptothrix*

卷之三

卷之三十一

10. *Leucosia* sp. (Diptera: Syrphidae) was collected from the same area as the *Chrysanthemum* plants.

卷之三

10. *Leucosia* *leucostoma* *leucostoma* *leucostoma* *leucostoma*

19. *Leucosia* sp. (Diptera: Syrphidae) was collected from the same area as the *Chrysanthemum* plants.

10. The following table shows the number of hours worked by each employee.

卷之三

10. The following table shows the number of hours worked by each employee.

**भणेण उ निमित्तेण, ज्ञाण-संकल्पएहि य ।**

**जा जस्त स अतिथ ताए य, जाए धर्म-पहावण ॥ १०७ ॥**

मन रो होने वाला चमत्कार अचांग निमित्त, ज्ञान और संकल्प रो होता है। इस प्रकार जिसके पास जो भी चमत्कारी विद्या है, उससे वह धर्म की प्रभावना में गत्व करे।

**टिष्पण-ज्योतिष, सामुद्रिक आदि और ग्राहुनिरा जशरविद्या, संकविद्या आदि निमित्त में, योग से प्राप्त विमूर्तियाँ, लक्ष्यग्राही आदि व्यान में और हिन्दाटिज्म, इन्द्रजाल आदि संकल्प में गमित हैं ।**

**ललिया उवधोगी य, कला वि विवहा पुणो ।**

**चित्त-लेहण-संगीय-सिष्पाइँ पढमा कला ॥ १०८ ॥**

कलाविद्या के भी ललित और उपयोगी—अनेक भेद हैं। चित्रकला, लेखनकला, संगीतकला, शिल्पकला आदि कई प्रकार की ललितकला हैं।

**टिष्पण-तिपि, फारथ, कथा, कहानी, उपन्यास आदि लेखनकला के अनेक भेद-प्रभेद हैं ।**

**वस्थु-विज्जय-मार्दि य, बीयं जाणिज्ज वा कलं ।**

**जा उचिया उ ताहि च, फुज्जा धर्म-पहावण ॥ १०९ ॥**

**वास्तुकला, वैद्यक (चिकित्सा) आदि दूसरी उपयोग कला के कई भेद हैं। जो कलाएँ धर्मक्षेत्र के योग्य हों, उन-उन कलाओं से धर्म की प्रभावना करे।**

**- तपादि-प्रभावना**

**तवं वयं स-सत्तीए, दीहं करेह सोहण ।**

**धर्म-प्रभावगं गंथं, विपरद्व पयासइ ॥ ११० ॥**

जैसे यह विद्या के अनुभव एवं ज्ञान का विद्या ही भी  
विद्यार्थी तक प्रतिकृति नहीं हो सकता क्योंकि विद्या विद्या की विद्या ही नहीं हो सकती है। इसका अर्थ यह है कि विद्या की विद्या विद्या की विद्या ही नहीं हो सकती है, विद्या विद्या की विद्या ही नहीं हो सकती है।

मुद्रार्थी पूरा महाराज आहे

ପ୍ରକାଶିତ ମାନ୍ୟକାର, ମହାନ୍ୟକାର ଆଜି ଦିନ ।

“我就是想让你知道，你不是唯一一个被我爱着的人。”

અનુભવ કરીએ, પણ તો હોક રહેતી હતી. હોક  
એ હજુ જીવની સાથીની જી જી હતી. હોક એ હજુ જી  
એ હજુ જી હતી.

ગુજરાતી કાવ્ય લાલબાબ

三

我們的社會，就是一個社會主義的社會。

如上所述，我們在研究中發現，這些問題都與社會文化背景有關。

此等事，人所习知，不復可謂之奇。故其後有司以爲  
當立碑記，以彰厥美，則又非子雲之子所宜辭也。  
今特立碑於其門外，使後之讀者，得無以爲子雲  
之子也。



ମୁଣ୍ଡ କୁରାତାପି ହିନ୍ଦ ମହା.

અને કોઈ વિશેષ પરિસ્તિથી જોકી ન હોય

• एवं साध्यता में लोकों का वही ने दक्षसंग शर्म के अप्रिय दृष्टि  
में बैठा। उन्होंने अपनी अप्राप्यता का अस्ति विचार किया। शर्म  
है तो अप्यते तो शर्म है अप्यता की अप्यशर्म है। अप्यता  
प्राप्ति शर्मी है जीव अप्यता का दुर्लभता है अप्यता  
प्राप्ति की अप्यता है। अप्यता का विचार किया तो अप्यता  
शर्म है अप्यता का विचार किया तो अप्यता

卷之三

如欲求得此等之數，則須將各項之數加總。

कृष्ण विद्या, कृष्ण विद्या विद्या

藏文大藏经中，此经有多种译本。

卷之三十一

卷之三十一

此皆其子也。故世謂之曰：「漢室之興，必在荊州。」

卷之三

三

卷之三

• ፳፻፲፭ ዓ.ም. የትምህር ደንብ

ओमाण-भागे न करे शमाणीं,  
नत्तारणामाणीं निराणी॥११९॥

१ संग की निरा नहीं करे, और गदि कोई निरा करता हो तो उगाना निरारण करे । २ मां में फूट नहीं किलाएं, गदि हो गई हो तो उसे दूर करे । ३ मां का निरक्षार नहीं करे और ४ परसपर शमाणना करे—गह मां की नार प्रकार की अनाशातना भवित है । इन्हें अचली तरह से जानकर करना चाहिये ।

### वैनयिका भक्ति

संघस्स कुज्जा अहिवायणं वा,  
धर्मस्स कज्जे मुहृषं च दिज्जा ।  
सेवं करेज्जा गुण-कित्तणं च,  
चउच्चिह्ना वेणइया य भक्ती ॥१२०॥

१ चतुर्विध संघ का अभिवादन करे या उसे वंदना करे । २ धर्म के कार्य में संघ को प्रभुत्वा दे । ३ चतुर्विध संघ की सेवा करे और ४ संघ का गुण-कीर्तन करे । यह संघ की चतुर्विध वैनयिका भक्ति है ।

### विघ्नोपशामिका भक्ति

संघस्स विघ्नाणि सभोहरेज्जा,  
रखेज्ज सत्तं सयलं च सारं ।

पर्वत शास्त्र संस्कृता पाठि,  
पर्वती शुद्धा विष्णुवामिति गृह्णतुम्

१ अप्रैल तिथि, यह दीर्घ समय के बाद मेरी विद्यालय-वासियों  
में एक दृष्टि विकल्प हो गया है कि इस शहर के अधिक विद्यालय  
में अधिक विद्यार्थी आने वाले हों ताकि विद्यालय की जगत् विद्यालय-  
वासियों अस्तित्व में हो।

藏文大藏经

藏文大藏经

मैं एक दूसरे विषय,

四百一十五

藏文： རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ རྒྱྲ

新嘉坡華人總會總理 謝啟明 謝啟明

卷之三十一

四、五、六、七、八、九、十、十一

卷之三

西藏文書

卷之三十一

四百三十萬人，占全國總人口的百分之三點八。

पर भी दमेजा पूर्ण न हो जाते । वह अन्धों की गति  
महारक होता चाहिए । उसीसे कर्मों के प्रभाव में  
गिरि हो जाते ।

पातोराणगुहिया हि जीवा,  
लोयेति धिजजं दद्वगम्भीजो वि ।  
यंता गुणे ते विद्वरा अमावा,  
अभावधं किं न करेद्व गायं ॥१२४॥

संसार में जीव पाप के उदय से निश्चय ही दुःखी है ।  
दृढधर्मी भी दुःख में अपना धैर्य छोड़ते हैं । ये अभाव के कारण  
गुणों को छोड़ कर विद्वल हो जाते हैं । अभाव वाला व्यक्ति  
क्या-व्यथा पाप नहीं करता है ?

धण्णोऽसि पुण्णो जिणधम्मचं जो,  
दुखली वि धण्णो गुणधं सधम्मे ।  
परिग्रहतं चइकण वित्तं,  
बछललएणं सहलं करेसु ॥१२५॥

हे लक्ष्मीवल्लभ ! जो तुम भौतिक पदार्थों से पूर्ण हों  
हुए भी जिनेश्वर देव के अनुयायी हो, तो तुम धन्य हो औ  
वह भी धन्य है, जो दुःखी होते हुए भी सद्धर्म में गुणों का  
धारक है । अतः तुम परिग्रह-भावना को छोड़ कर, साधर्मी  
के लिये वात्सल्य भरे कार्य के द्वारा अपने धन को सफल करो ।  
अर्थात् धन्य व्यक्ति की धन्यता को टिकाने के लिये, जो हेय  
वस्तु छूट कर या खर्च होकर कुछ फलप्रद नहीं होने वाली है,

這就是我所說的「新時代」的「新文化」。

卷之三

卷之三

卷之三

新嘉坡總理，新嘉坡總理，新嘉坡總理，新嘉坡總理

我們在這裏的時間是不長的，但我們的經驗是豐富的。我們在這裡學習到了許多知識，也學到了許多技能，這些都是我們在別處學不到的。

१०८ अस्ति विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु  
विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु

અને એવી વિશેષતા હોય કે, આપણાં જીવનાં

新嘉坡華人，南洋人，印度人，都是我們的同胞。

وَالْمُؤْمِنُونَ الْمُؤْمِنَاتُ وَالْمُؤْمِنُونَ الْمُؤْمِنَاتُ

卷之三十一

故其有子者，必有其母也。故曰：「母者，子之天也。」

我說：「我就是那樣的，我就是那樣的。」

卷之三

卷之三

पाणीपात शाराहि, जा डिंग करेज तं ।  
कावहशार्य शारा धीरो, सरोरणा-विमेपर १३०  
धो। पुण (मेरी गहिर) पवीय शारोच्छवास से लगा  
कर, जहाँ तक भिला रह गए भर्हतक देह और आत्मा की  
भित्तना का अनुभव कराने वाला कायोत्तामं सदा करे ।

एमोपकारेण लोगस्स-सुतेण वा जहवकम् ।

काउस्सां तिगच्छं वा, वणस्सधिमं करे १३१  
धैर्यवान् नमस्कारमय वथवा 'तोगस्स' सूत्र के माध्यम  
से यथाक्रम कर्मकुपी धाव चिकित्सा के समान कायोत्सर्गं करे।

टिप्पण- १ इवासोऽध्यवास की गिनती के दो माध्यम हैं—नमोपकार मन्त्र और २ घटुविद्वतिस्तव सूत्र । नमोपकारमन्त्र का एक-एक पद प्रत्येक इवास पर गिनते पर पांच इवासोऽध्यवास होते हैं और लीगस्स सूत्र की प्रत्येक गाया के प्रत्येक चरण प्रत्येक इवास पर गिनते पर 'चंदेशु जिम्मत-परा' तक पहुँचीत इवासोऽध्यवास होते हैं ।

परा' तक पहुँचो स श्वासोद्धृतात होते हैं ।  
२ प्रथम अर्थात् २५ या ५० या १०० या ५०० या १००० श्वासोद्धृतात का कायोत्तर्ग करता । जहाँ तक श्वासोद्धृतात की नियत स्थिरता न हो दरांतक पाठ की इन्हें बावृति करते हए चाहिये ।

એ બાળની કા કુદા તથ 'કા વિલાય' ની એવી જીવની કી  
જીવની જીવન કુદા હોય છે :

એ બાળની જીવની કા જીવન કુદા જીવની કી જીવની કી જીવન  
જીવની કી :

બોલી કી એ કી ખાલીની, રૂપાનાની પ્રાણી ।

બોલીની ખાલીની, કુદા જીવનીની । એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ

બોલીની ખાલીની, એ કુદા જીવનીની ।

બોલીની ખાલીની, બોલીની જીવનીની । એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ

બોલીની ખાલીની, એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ

બોલીની ખાલીની, એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ એ

બોલીની ખાલીની, એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ

બોલીની ખાલીની, એ એ એ એ એ એ એ  
એ એ એ એ એ એ એ એ

४ नाशिला-द्वार पर दृष्टि-गाह के निर्मि गे शाश्वत-शुभा  
महा है। अतः वही निरीश्वर करना। शाश्वत न गहना, न बड़ाना पर  
महज भाव गे जनने वेना और उगके बाहर आयोजाए शाश्वत पर्यों का  
प्रानशिक नितान करते जाना।

५ अप्रमत्ता-इस प्रकार को प्रतिष्ठा गे निता जाने की सम्मा-  
णना रहती है। अतः शाश्वत रहना। यदि धीर्णे यंद न पार के, नाशिका  
के अप्रमाण पर या निर्मि पुद्गता पर उन्हें स्थिर निता जाय तो अप्रमत्ता  
अच्छी रह सकती है।

### एकादश वोल

(श्रूत-स्मृति)

(अनुष्टुप्)

जिणिद-वुत्तं गण-णाह-दिनं,  
सुयं हि धम्मस्स पगासर्गं च ।  
उप्पायर्गं वुद्धिकरं हिअस्स,  
अहिज्ञए जाव सरीर-मेए ॥१३४॥

जिनेन्द्र देव के द्वारा कहे गये, गणधरों के द्वारा दिये गये,  
धर्म के स्वरूप को स्पष्ट रूप से प्रकट करने वाले, हित के  
उत्पन्न करने वाले और वृद्धि करने वाले श्रुत का देह के द्वूटने  
तक अध्ययन करे। अर्थात् सूत्र को कण्ठस्य करना चाहिये।

पयास-थंभो भव-सायरे जं,  
जस्ति पउत्ता तहिया हि भावा ।  
णिर्खितं अत्त-विहाव-चवकं,  
सुयं पढे तं थिर-माणसेण ।१३५।

१०८ अनुसारी विश्वास के अनुसार यह विषय का उत्तर यह है कि यह विषय एक विश्वास का विषय है जो विश्वास की विश्वास के विश्वास का विश्वास है।

માનવાની વિજયી અંતર્ગત,

藏文：西藏民族学院

ଶୁଣି ମୁଁ କହିଲା ଦୁଇଜନ

ମୁଖ୍ୟମନ୍ୟାନ୍ ପରିବାରରେ କହିଲା ଯାହା

卷之三

卷之三

新嘉坡之華人，多以種族為界限，如華人中之華人，印度人中之印度人。

卷之三

故人不以爲子也。子之不孝，則無子矣。故曰：「子不孝，無子也。」

藏文大藏经中有关于“五方佛”的记载，但没有“五方佛”造像。

२ गुणतांत्रो हा स्पाद्यात जात्या, ३ पात्रतांत्रो-गुण की आवृति  
जाता अभ्युपेत्तांत्रों का विज्ञा जाता और ५ गार्वता । उपर्युक्त  
जाता में पात्रतांत्रास्पदात् हा विरेत्त है ।

अहं सुत्तरस नितिज्ञा, हितांगमि पुणो पुणो ।

जेणं च कम्म गंडीओ, भितिज्ञा खलु अपणो ॥

गुन के गर्भ का इन्द्रग में नार-वार नितान करें । जिससे  
धारनी कर्म-गतिगाँव गिर जाएँ ।

टिष्ठण-इन गाया में स्पाद्याय के जीवे जीव अनुप्रेष्ठा करने का  
कह कर, उसका फल बालाया गाया है । अनुप्रेष्ठा से कर्म-निर्जरा बिन्ह  
होती है ।

पद्ययणस्स मायाए णाणं करे खु एत्तियं ।

अणाणुपुच्चि-णोक्कारं, गुणे वाट्ठुत्तरं सयं । १३९।

अष्ट प्रवचनमाता (पांच समिति-तीन गुप्ति) का ज्ञान  
जघन्य ज्ञान है । कम से कम इतना ज्ञान अवश्य करे । (यदि  
नित्य प्रति या कभी स्वाध्याय नहीं हो सके तो) अनानुपूर्वी से  
नमोक्कार मंत्र या एक सी आठ वार नमोक्कार मंत्र अवश्य  
गिनें ।

(काण्ड)

आवस्सएणं णिय-धम्म-कज्जं,

पच्चीस-बोलेण य धम्म-तत्त्वं ।

वीरत्थुईए खलु देव-तत्त्वं,

णमिष्पवज्जाइ भुणेज्ज भग्गं ॥ १४० ॥

'आवश्यक सूत्र' से अपने धर्मकर्त्तव्यों को, पच्चीस बोल



गीतस्तु न गमिष्य, कर्म गवेद जितिष्य ।

गनुराजार-गहिणान्, गवेद जितिष्य गलु ॥१४४॥

जीव नरक में पीड़ा भोग कर गी वह में जितो कर्म का शग करता है, गनुण उन्हें कर्मों को 'गनुराजारगहिण' प्रत्याख्यान से शग कर देता है। गणित जानी जानवल से स्वेच्छा से अला पुण्यार्थ कर के, गनुराजे कर्मों का शग कर सकता है।

### अथोदश बोल

(दिवस चरिम-प्रत्याख्यान)

(काण्ड)

सूरत्य-फालाउ मुहूत्त-पुच्छे,

आहार-चायं तु करेसु भव्य ।

ण रत्ति भुत्ती किर सावगस्स,

कयावि जुत्ता वहु-दोसवंती ॥१४५॥

हे भव्य ! सूयस्ति से एक मूहूर्त के पहले से आहार के त्याग करो। रात्रि-भोजन वहुत दोषों से भरा है। इसलिये आवक को रात्रि-भोजन कभी नहीं करना चाहिये।

(आर्य)

दिवसंतिमे मुहूत्ते, जं आहारस्स वज्जणं तं तु ।  
दिवस-चरिमं जिणेहि, पच्चयखाणं हि पण्णत्तं ॥१४६॥

दिवस के अन्तिम मूहूर्त में जो आहार का त्याग किया जाता है, उसे जिनेवर देव ने 'दिवसचरिम' नाम का प्रत्याख्यान कहा है।



है। और (दूध, पानी, मुख्यावाग के मिनाग गा गाने वाली मिठाई, दूध आदि के शिवाय रानि-भोजन के त्याग आदि) भी कई भेद प्रनलित हैं। श्रावक अपनी शक्ति के अनुसार प्रत्याख्यान करता है।

**रत्ति-मोयण-चाएण, सुट्ठु होइ वहुं फलं ।**

**अणायासेण मासंमि, पवखोववासयं फलं ॥१५०॥**

रात्रिभोजन का त्याग करने से वहुत थ्रेष्ठ फल मिलता है। विना किसी शर्म के सहज में ही एक महिने में एक पक्ष के उपचास का फल प्राप्त होता है।

टिष्पण-रात्रि-मोजन से आष्ट्रात्मिक हानि क्तो है ही। परन्तु शारो-रिक दृष्टि से भी हानि होती है।

### चतुर्दश वोल

(आवश्यक)

आवस्सएसु कालो उ, जस्स चि जो हु तम्मि य ।

भत्तिजुत्तो करेज्जा तं, सहरिसो सुसावगो ।१५१।

उत्तम श्रद्धालु श्रावक आवश्यक क्रियाओं में, जिस भी क्रिया का जो काल हो, उस काल में उस क्रिया को हर्य और भवित से भरपूर होकर करता है।

टिष्पण-आवश्यक क्रियाएँ छह है—१ सामायिक २ चतुर्विशतिस्तय, ३ घंदना, ४ प्रतिक्रमण ५ कायोत्सर्ग और ६ प्रत्याख्यान। इनमें से दूसरे, तीसरे, और पांचवें आवश्यक का विधान तीसरे, चौथे और चारवें बोल में हो चुका है और छठे आवश्यक का १२ वें १३ वें और १५ वें चोल में कुछ विधान है। शेष दो आवश्यक सामायिक और प्रतिक्रमण का इस बोल में विधान किया गया है।



जोर के लिये) निरापत्ति भोग या विभग हो।

### प्रतिक्रमण

नासगं जं पमायरस, मोगा-मग्गहस सारयं ।

करगिजजं दुर्सज्जाप, आवस्यधं नउत्थयं ॥१५५॥

जो प्रमाद को नाल करने चाहा है और जो मोगमार्ग को निकट शोष या निर चाहने चाहा है, वह चौथा प्रतिक्रमण प्राप्त कान और चायंगल दोनों गम्भाओं में करना चाहिए।

(काथ)

गुणाण रूदं सरिऊण जीवो,

आलोयणं जोगगईइ किच्चा ।

जा वक्कया घारइ तं गुणंमि,

दोसं कयं तं अफलं सरित्ता ॥१५६॥

जीव गुणों के स्वरूप का स्मरण करके, अपनी मानसिक, वाचिक और कायिक क्रिया की गति का निरीक्षण करता है। वह गुणों से दूर जाने रूप जो योग वी वक्रता है, या गुणों में जो दोष लगाया है, 'वे निष्फल हो'—उन्हें इस रूप में स्मरण करके, योगवक्रता को गुणों में मोड़ देता है (यह प्रतिक्रमण है)।

(अनुष्टुप्)

पुणोऽकरणवित्तीए, धरणं तु ददं मणे ।

तं पडिक्रमणं होइ, साहणाए विसोहणं ॥१५७॥



(यहाँ दूर्लभों की विवरता की जाता है) ग्रन्थों के लिए  
(अतिनार) नंद द्वारा जाते हैं और उनमें भी शुल्क होती है।

### पञ्चदश बोल

(दीक्षा ऐन नियम)

### दीक्षा प्रयोगशाला है

(काण्डा)

दिवसा हु अज्ञात-प्रयोग-साला,

जाए गुणी साहृदय-अप्पमत्तो ।

जीवस्स देहस्स य जो सिलेसो,

अच्चंतियं भंजइ तं सुही सो ॥१६॥

दीक्षा अर्थात् साधुत्व को ग्रहण करना—अधि  
प्रयोगशाला है। जिसमें मूलोत्तर गुण को धारण क  
प्रमाद से रहित सावधान वह जाधक सुखानुभव कर  
जो जीव और देह का एकत्व रूप अनादिकालीन वा  
वंवन चल रहा है, उसे आत्यन्तिक रूप से उत्तम  
तोड़ता है, वह उस श्लेष को तोड़ कर शाश्वत् सुख  
करता है।

लक्ष्य-हेतु त्याग की प्रतिज्ञा

कथा अहं संजम-जोगयं तं,

सुद्धं गहिस्सामि सिवो भविस्सं ।

ए जाव दिवसं लहिहामि ताव,

जं किंचि वत्युं हि



## प्रस्तुत्यी

(प्रारंभी)

सासणे पहुँचीरस्स, धर्मदासो मुणीसरो ।

आयरिओ सिरीमंतो, होंसु धर्म-धुरंधरो ॥ १६६॥

अन्तिम तीर्थकुर भगवान् गहावीर प्रभु के शागन में  
मुनियों में प्रधान श्री धर्मदासजी महाराज हो गये हैं । वे  
ज्ञानादि रक्षनव्यवहर लदमी से सम्पन्न आचार्य-प्रब्लर थे । और  
वे धर्म की धुरा को धारण करने वाले थे ।

तस्सीस-हरिदासस्स, अण्णये वि मुणीवरा ।

तवस्सी पद्धिया केइ, वत्तारा मुणि-पुंगवा ॥ १६७॥

उनके कई विशिष्ट शिष्यों में एक श्री हरिदासजी नाम  
के मुनि भी थे । उनकी शिष्य-परम्परा में भी थ्रेष्ठ मुनिराज  
हुए हैं । मुनियों में प्रधान कई तपस्थी थे, कई विद्वान् थे और  
कई उत्तम वक्ता मुनिराज थे ।

तेर्ति पुज्जवरो सेद्धो, णंदलाल-महामुणी ।

चाई लज्जू णिरावेदखो, परीसह-चमू-जई ॥ १६८॥

उनमें एक पूज्यवर श्री नन्दलालजी महाराज थे । वे थ्रेष्ठ  
व्रती और महामुनि थे । उनकी त्यागवृत्ति महान् थी । वे  
संयमी के योग्य विशिष्ट लज्जा के स्वामी थे । उन्हें संसार से  
यश-कीर्ति आदि किसी की इच्छा नहीं थी—वे परम निरीह थे  
और इस निरीह भाव से उन्होंने परीपह रूपी सेना को जीत  
लिया था ।



जोन के निये) नियम ही थोड़ा-गा चाहा है।

### प्रतिक्रमण

नासगं जं पमायस्ता, मोनल-मगगस्त सारयं ।

करणिजजं दुसंज्ञाए, आवसरायं चउत्थयं ॥१५५॥

जो प्रमाद को नष्ट करने वाला है और जो मोथगांग को निष्कंटक थ्रेठ या सिन्द्र बनाने वाला है, वह जीवा प्रतिक्रमण प्रातःकाल और गायंजाल दोनों गच्छाओं में करना चाहिये।

(काव्य)

गुणाण रूबं सरिङ्ग जीवो,

आलोयणं जोगगईइ किच्चा ।

जा वक्कया वारइ तं गुणंमि,

दोसं कयं तं अफलं सरित्ता ॥१५६॥

जीव गुणों के स्वरूप का स्मरण करके, अपनी मानसिक, वाचिक और कायिक क्रिया की गति का निरीक्षण करता है। वह गुणों से दूर जाने रूप जो योग की वक्ता है, या गुणों में जो दोष लगाया है, 'वे निष्कल हो'—उन्हें इस रूप में स्मरण करके, योगवक्ता को गुणों में मोड़ देता है (यह प्रतिक्रमण है)।

(अनुष्टुप्)

पुणोऽकरणवित्तीए, धरणं तु दद्धं मणे ।

तं पडिक्कमणं होइ, साहणाए विसोहृणं ॥१५७॥

पुनः दोष नहीं करने की वृत्ति से साधना की विशोधि को

यह मैं दुर्लभ हूँ यद्यपि विद्या-वारी कमाते हैं जीवनम् ।  
लाहौ अस्ति संतात्, लाम्भिष्यते परो ।

ગુજરાત-નિવાસીનું જી, વિભિન્ન રૂપથી જણે રહ્યા

इनकिंस (मार्क ली विल्हेल्म के लिए), दैवत सरकारी वी  
क्टोरियन विजयी त्रै को दृष्टि ली दैवत सरकारी वीक्टोरियन  
वीक्टोरियन।

卷之三

कामदण्ड दिति २. पुरिकार्य प्रयोग समा।  
प्रेषण्य दिति ३. विश्वामी-वार्तिका ४. विश्वा।

କରୁଥିଲେ କାହିଁ କାହିଁ କିମ୍ବା କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ

त्रिवेदी शब्द से अन्य शब्दों की विभाजन की विधि विभिन्न है।

卷之三

(अपने दुष्कृती की विषयात्मा वही भागवा गे) प्रतीं के लिए  
(अतिनार) वंद हो जाते हैं और ज्ञानी की शुभि होती है।

### पंचवश बोल

(वीक्षा हेतु निषण)

### दीक्षा प्रयोगशाला है

(काण्डा)

दिवखा हु अज्ञात-पयोग-साला,  
जाए गुणी साहुग-अपमत्तो ।  
जीवस्स देहस्स य जो सिलेसो,  
अच्चंतियं भंजइ तं सुही सो ॥१६२॥

दीक्षा अर्थात् गाधूत्व को ग्रहण करना—अध्यात्म की प्रयोगशाला है। जिसमें मूलोत्तर गुण को धारण करने वाला प्रमाद से रहित सावधान वह साधक मुख्यानुभव करता हुआ, जो जीव और देह का एकत्व रूप अनादिकालीन वज्रलेप गा वंधन चल रहा है, उसे आत्यन्तिक रूप से = सदा के लिये तोड़ता है, वह उस श्लेष को तोड़ कर शाश्वत् सुख को प्राप्त करता है।

### लक्ष्य-हेतु त्याग की प्रतिज्ञा

कथा अहं संज्ञम-जोगयं तं,  
सुद्धं गहिस्सामि सिवो भविस्सं ।

ए जाव दिवखं लहिहामि ताव,  
जं किंचिं वहं न भाग्यि भंते ! ॥१६३॥

三

新編《中華書局影印》卷之三，民國三十一年。

स्वरूप एवं विषयका अधीन, युद्धकाली शुद्धता की उपलब्धि  
में दृष्टि नहीं रखती। इसके अवधारणा की विवरणों की विवरणों  
में दृष्टि नहीं रखती। इसके अवधारणा की विवरणों की विवरणों  
में दृष्टि नहीं रखती। इसके अवधारणा की विवरणों की विवरणों  
में दृष्टि नहीं रखती।

卷之三十一

故其後世皆爲侯伯，其餘皆爲卿大夫也。蓋漢之興，自高祖始，故其後世皆爲侯伯，其餘皆爲卿大夫也。蓋漢之興，自高祖始，故其後世皆爲侯伯，其餘皆爲卿大夫也。

## पमत्थी

(प्रशस्ती)

सासणे पहुंचीरस्स, धम्मदासो मुणीसरो ।

आयरिओ सिरीमंतो, होंसु धम्म-धुरंधरो ॥ १६६ ॥

अन्तिम तीर्थकुर भगवान महावीर प्रगु के शामन में  
मुनियों में प्रधान श्री धर्मदासजी महाराज हो गये हैं। वे  
ज्ञानादि रत्नत्रयहृषि लक्ष्मी से सम्पन्न आचार्य-प्रवर थे। और  
वे धर्म की धुरा को धारण करने वाले थे।

तस्सीस-हरिदासस्स, अण्ये वि मुणीवरा ।

तवस्सी पद्धिया केइ, वत्तारा मुणि-पुंगवा ॥ १६७ ॥

उनके कई विशिष्ट शिष्यों में एक श्री हरिदासजी नाम  
के मुनि भी थे। उनकी शिष्य-परम्परा में भी थ्रेष्ठ मुनिराज  
हुए हैं। मुनियों में प्रधान कई तपस्थी थे, कई विद्वान थे और  
कई उत्तम वक्ता मुनिराज थे।

तेसि पुज्जवरो सेद्धो, णंदलाल-महामुणी ।

चाई लज्जू णिरावेक्खो, परीसह-चमू-जर्ड ॥ १६८ ॥

उनमें एक पूज्यवर श्री नन्दलालजी महाराज थे। वे थ्रेष्ठ  
व्रती और महामुनि थे। उनकी त्यागवृत्ति महान् थी। वे  
संयमी के योग्य विशिष्ट लज्जा के स्वामी थे। उन्हें संसार से  
यश-कीर्ति आदि किसी की इच्छा नहीं थी—वे परम निरीह थे  
और इस निरीह भाव से उन्होंने परीपह रूपी सेना को जीत  
लिया था।

प्रत्यक्षाप्तिकार, प्रत्यक्षीको व सुनिधो ।

अथ विद्यावाचिति, प्रत्यक्ष-विभो युक्ति ॥३६८॥

यह युक्ति की विवरणीः विद्यावाचि विद्यावाचिति के रूप में विद्या की विद्यावाचि विद्यावाचि है । अब विदि है विद्यावाचि विद्या विद्या की विद्या विद्या है । अब विद्यावाचि विद्या की विद्या विद्यावाचि है । अब विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि विद्या की विद्या है । अब युक्ति की विद्या विद्या विद्या की विद्या है ।

विद्यावाचि विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि ।

विद्या-विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि

विद्यावाचि विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि ।

विद्यावाचि विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि

विद्यावाचि विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि ।

विद्या-विद्यावाचि विद्यावाचि, विद्या विद्यावाचि विद्यावाचि



कामदारीहित, वर्षार्थी य शुद्धिः ।

स्त्री विग्रहविकली, पर्वता-पितो युनी ॥२६३॥

यह शुन की विवाही विवाह के अमर-कामी के  
ली के लाभ की शुद्धिकी विवाह है । शर इसी है  
विवाह विवाह का है वह विवाह की विवाह है । अब विवाह  
विवाह के लाभ शुद्धिका है । शर विवाह विवाह  
विवाह के लाभ है । विवाह के इस विवाह के लाभ विवाह  
विवाह है ।

शुद्धिशुद्धिविवाह, वर्षा-वीर्यवृ विवाहः ।

वर्षा-वीर्यवृ विवाह, वर्षा वीर्यवृ-विवाही शुद्धिविवाह

विवाहविवाह-विवाह, वर्षा-वीर्यवृ-विवाह ।

विवाहविवाह, विवाहविवाह-विवाह शुद्धिविवाह

विवाहविवाह-विवाह-विवाह-विवाह ।

विवाहविवाह-विवाह, विवाह विवाह विवाह-विवाह ।

शुद्धिशुद्धिविवाह की शुद्धिविवाह के लाभ विवाह है वह "विवाह"  
विवाह विवाह विवाह है । शुद्धिशुद्धिविवाह के लाभ विवाह विवाह में  
शुद्धिशुद्धिविवाह के लाभ विवाह है । वह विवाह  
विवाह, विवाह के लाभ विवाह की विवाह विवाह विवाह है । वह विवाह  
विवाह के लाभ विवाह की विवाह विवाह है । वह विवाह  
विवाह के लाभ विवाह की विवाह विवाह है । वह विवाह  
विवाह के लाभ विवाह की विवाह विवाह है । वह विवाह



